केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी और

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी

द्वारा आयोजित

पश्चिम क्षेत्रीय नाट्य समारोह

29 जनवरी - 1 फरवरी 1990 प्रतिदिन सायं 6.30 बजे

रवीन्द्र मंच, जयपुर

सोमवार 29 जनवरी 1990

जेठवा ऊजळी (राजस्थानी)

निर्देशक : अर्जुन देव चारण

प्रस्तुति : रम्मत, जोधपुर

कथासार

राजस्थान में राजपूतों और चारणों के बीच परम्परा से सगे भाई-बहनों जैसे संबंध चले आ रहे हैं। यह नाटक एक राजपूत युवक और चारण युवती के प्रेम की पारम्परिक गाथा पर आधारित है।

साथियों से बिछुड़ने के बाद राजकुमार जेठवा मरणासन्न स्थिति में ऊजळी के पिता को नज़र आता है। शरणागत के प्राण बचाने की चेष्टा में असफल होने पर वह ऊजळी को आदेश देता है कि वह अपने शरीर की गर्मी से जेठवा के प्राण बचाए। जीवन दान मिलने पर उपकृत जेठवा ऊजळी को विवाह का वचन देकर चला जाता है। राजपूतों और चारणों की वंश परम्परा विवाह में बाधक है। व्यर्थ रक्त-पात को रोकने के लिए ऊजळी अपना बलिदान दे देती है।

निर्देशकीय वक्तव्य

प्रस्तुति में लोक-गाथा एवं लोक-नाट्य के तत्वों का समावेश करने का प्रयत्न किया गया है। पारम्परिक राजस्थानी गीतों और छंदों के नाद सौंदर्य के प्रस्तुतीकरण के लिए सोरठों का उपयोग किया गया है। संगीत और नृत्य संयोजन में राजस्थानी लोक-नाट्य रूपों से सहायता ली गई है। अनौपचारिक अभिनय शैली इस संगीतमय नाट्य प्रस्तुति को राजस्थान की लोक-नाट्य शैलियों से जोड़ती है।

अर्जुन देव चारण (जन्म 1954)

शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी.। लगभग बीस नाटकों का निर्देशन।
प्रमुख हैं : *बकरी, खड़िया का घेरा, बोल म्हारी मछली, तत्वमसि, धरम जुद्ध* आदि। उपरोक्त अन्तिम तीन के नाटककार भी।

पात्र

जेठवा : *दीपक भटनागर*
ऊजळी : *निर्मला पुरोहित*
अमरौ : *प्रेमसिंह*
राजा : *अशोक व्यास*
खीमा : *महेश माथुर*
रानी : *गीता भट्टाचार्य*
सेनापति : *चन्द्र प्रकाश*
मंत्री : *कामेश्वर माथुर*
राजदूत : *हीरा लाल*
सैनिक : *सोहन, सुनील माथुर, गिरिराज, कमल किशोर*
ग्रामीण : *घनश्याम, माधव, मुकेश, अजय श्रीवास्तव, अशोक परमानन्द*
गाथा गायक : *भवानी सिंह*
गाथा गायिका : *रमीला गहलोत।*

नेपथ्य

हारमोनियम : *रामदेव गौड़*
नगाड़ा : *ब्रजेश*
सारंगी : *हयात खां*
अलगोजा : *हसन*
मोरचंग : *मदन लाल*
प्रकाश व्यवस्था : *शफ़ी मोहम्मद*
मंच सज्जा : *सुशील पुरोहित*
आलेख : *अर्जुन देव चारण।*

मंगलवार 30 जनवरी 1990

दगड़ क माती (मराठी)

निर्देशक : चन्द्रकान्त कुलकर्णी

प्रस्तुति : इप्टा, बम्बई

कथासार

दीवार का प्रयोजन मनुष्य की रक्षा है या विभाजन ? वेंकट और सुशीला का पुत्र सारंग और पुत्री किरन इस 'दीवार' के अदृश्य होने से संतप्त होते हैं। सुरक्षा और निजी गोपनीयता के लिए दीवार की अनिवार्यता अनुभव करके वे एक ठेकेदार की सहायता से नई दीवारें चुनवाते हैं ; किन्तु ये दीवारें भी उन्हें सुरक्षा देने में असमर्थ होती हैं। प्रतीकात्मक दीवार अनेक स्तरों पर मानव सम्बन्धों की संश्लिष्टता को रेखांकित करती है।

निर्देशकीय वक्तव्य

दीवार के पार देख सकना और दीवारों में रह कर भी असुरक्षित और अगोपन होना—ये फ़ंतासी के तत्व विशेष प्रकार की नाट्य-शैली की मांग करते हैं। अतः प्रस्तुत नाटक में एक सीमा तक 'ब्लैक कॉमेडी' की नाट्य-युक्तियों का निर्वहण करने का प्रयत्न किया गया है। आलेख की बुनावट यथार्थवादी और फ़ंतासी के बीच की सीमारेखा पर आधारित है, इसलिए अभिनय तथा प्रस्तुतिकरण में दोनों शैलियों का समन्वित रूप दृष्टिगत होता है।

चन्द्रकान्त के. कुलकर्णी (जन्म 1962)

शिक्षा : बी.एस.सी। मराठवाड़ा विश्वविद्यालय से ड्रैमेटिक्स में डिप्लोमा तथा डिग्री।

व्यवसाय से पत्रकार। पिछले नौ वर्षों में लगभग तीस नाटकों का निर्देशन। प्रमुख है : *हैमलेट, पुरुष, आषाढ़ का एक दिन, पोस्टर, हमीदाबाई की कोठी, आरण्य, कमला* आदि। महाराष्ट्र नाट्य स्पर्धा में अनेक पुरस्कार प्राप्त। सम्पृति : मुम्बई सकाल में सह-सम्पादक।

पात्र

सुशीला : *दीपा श्रीराम*
वेंकट : *जयंत फड़के*
किरन : *प्रतीक्षा लोनकर*
सारंग : *मिलिन्द सफ़ाय*
ठेकेदार : *विनय आप्टे*।

नेपथ्य

संगीत : *विनय आप्टे*
प्रकाश : *अभय जोशी*
मंच परिकल्पना : *मिलिन्द जोशी*
वेशभूषा : *जुआज़ बातिक*
रूप सज्जा : *अशोक पंगम*
प्रस्तुति संयोजक : *आबिद रिज़वी*
आलेख : *प्रशान्त दलवी*।

बुधवार 31 जनवरी 1990

ग्रहण (गुजराती)

निर्देशक : महेश चम्पक लाल शाह

प्रस्तुति : त्रिवेणी, बड़ौदा

कथासार

सूर्य ग्रहण के प्रभावों का अध्ययन करने गांव आया युवा वैज्ञानिक आदित्य डोलर के अतिथि गृह में ठहरता है। गांव के लोगों का विश्वास है कि ग्रहण के समय देवी माँ प्रकट होती है। आदित्य खंडन करता है। डोलर आदित्य के प्रति आकर्षित होती है। टींबे के बाबा जी आदित्य से बदला लेने की तैयारी करते हैं।

ग्रहण के समय आदित्य बाबाजी के कुकृत्यों का भंडा फोड़ करता है और दोनों लड़ पड़ते हैं। आदित्य की कमीज़ फटने पर उसकी पीठ का निशान देखकर बाबाजी डोलर को बताते हैं कि वह उन दोनों का बेटा है। डोलर और आदित्य सत्य को सह नहीं पाते।

निर्देशकीय वक्तव्य

भोले आदिवासियों को छद्म से ग्रसने वाले स्वार्थी और पाखंडी तत्व सामाजिक सरोकारों के लिए ग्रहण हैं। इस प्रस्तुति में आदिवासी जन-जीवन की लय, सुर और ताल के सहारे उस निर्माल्य को उद्घाटित किया गया है, जो हमारे संस्कारों की धड़कन है। पूंगी, पावो और ढोल की सहायता से ध्वनियों और मानव शरीर के कलात्मक उपयोग ने प्रस्तुति में शैली गत अनेक नई नाट्य युक्तियों को जन्म दिया है। गोसा-गोसी तथा राई-बूढ़िया जैसी आदिवासी नाट्य शैलियाँ आधुनिक संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए काम में लाई गई हैं।

महेश चम्पक लाल शाह (जन्म 1951)

शिक्षा एम.ए., पी.एच.डी. ; बी.म्यूज़ (ड्रामा) पिछले नौ वर्षों में सात नाटकों का निर्देशन। प्रमुख हैं : *बैकेट, लव फ्रॉम ए स्ट्रेंजर, केअरटेकर, रक्तबीज, द विज़िट* आदि। स्व. प्रवीण जोशी, अरविन्द जोशी, विजय दत्त, मार्कण्ड भट्ट तथा यशवन्त केलकर के साथ अनेक नाटकों में काम किया। सम्प्रति : वरिष्ठ व्याख्याता : एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

पात्र

आदित्य : *अखिलेश नानावती*
डोलर : *दामिनी अन्तानी*
बाबाजी : *हरीश व्यास*
गोमी : *हर्ष पांचाल*
खेम संग : *हास्य पटेल*
मान भट्ट : *भागीरथ पंड्या*
एम.एल.ए. : *बंकिम शाह*
अन्य : *भारत जोशी, चेतन जोशी, दिलीप शोलापुरकर, जयमिन नानावती, नीरज ठाकोर, राजकुमार कछिया, सेतु अन्तानी, शिरीष ओलपाड़कर, श्याम तम्हाणे, विजय भावस्कर*।

नेपथ्य

मंच सज्जा : *गोवर्धन पांचाल*
प्रकाश व्यवस्था : *डॉ. हेमन्त शर्मा*
वेशभूषा एवं मंच सामग्री : *सूर्य कान्त मिठावला*
रूप सज्जा : *शिव कान्त लकड़ावाला*
मंच व्यवस्था : *भानु उपाध्याय*
रंग सज्जा : *चेतन जोशी*
नृत्य संरचना : *डॉ. पारूल शाह*
वादक : *अनिल गाँधी, नानू रबवा*
गायक : *नीना पटेल, मोनिका याज्ञिक, जगदीश भट्ट*
प्रमुख स्वर : *राजेन्द्र बक्शी*
संगीत तथा सह निर्देशन : *पी.एस. चारी*
आलेख : *सितांशु यशस्चन्द्र*।

बृहस्पतिवार 1 फरवरी 1990

ईसुरी (हिन्दी)

निर्देशक : अरुण पांडे

प्रस्तुति : विवेचना, जबलपुर

कथासार

बुंदेलखंड के प्रसिद्ध लोककवि ईसुरी की कृतियों पर आधारित यह नाटक उन्नीसवीं शती की सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्थितियों का दिलचस्प चित्र उपस्थित करता है।

अंग्रेज़ सैनिकों के अत्याचार के क्षुब्ध ईसुरी अपने शिक्षक भरोसे बब्बा की प्रेरणा से कविताओं में विद्रोह के स्वर फूँकते हैं। प्रेमासक्त ईसुरी रज्जो से प्रताड़ना पाकर जन-जन की ओर उन्मुख होते हैं और उन्हें संस्कारित तथा संगठित करने का संकल्प लेते हैं। महाराज छतरपुर द्वारा दिए गए सम्मान और राजकवि के पद को विनम्रता पूर्वक अस्वीकार करके वे अनवरत संघर्ष का मार्ग अपनाते हैं।

निर्देशकीय वक्तव्य

ईसुरी (ईश्वरी प्रसाद) की काव्य रचनाओं के माध्यम से उनके जीवन चरित्र को कथा के रूप में बुना गया है। तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाएं और उनकी रचनाओं पर किया गया शोध इस नाटक का आधार है। शैली के स्तर पर लोक परम्पराओं और आधुनिक प्रस्तुतीकरण-तकनीक के बीच तालमेल बनाने का प्रयास किया गया है। सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के बरक्स ईसुरी के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व ओर आन्तरिक संघर्ष को रेखांकित करने की चेष्टा की गई है।

अरुण पांडे (जन्म 1955)

शिक्षा : बी.एस.सी, जबलपुर विश्वविद्यालय से ड्रामा में सर्टिफिकेट कोर्स। लगभग तीस नाटकों में अभिनय तथा पन्द्रह नाटकों का निर्देशन। प्रमुख हैं : *जुलूस, दुलारी बाई, लोककथा, आला अफ़सर, विद्ध शालभंजिका* तथा *आषाढ़ का एक दिन*। अनेक नाट्य कार्यशालाओं का संचालन। बी.वी. कारन्त, बंसी कौल, अलख नन्दन, अलोपी वर्मा आदि निर्देशकों के साथ काम करने का अवसर मिला। हरिशंकर परसाई, भीष्म साहनी, विजयदान देथा आदि की कहानियों का नाट्य रूपान्तर। स्वयं कहानीकार। सम्प्रति : श्रमजीवी पत्रकार।

पात्र

ईसुरी : *मुरलीधर नागराज*
रज्जो : *आरती राजौरिया*
भरोसे बब्बा/रामसिंह : *नवीन चौबे*
धीरे पंडा/मृदंगिया : *संजय खन्ना*
टिमकी वादक : *कश्यप झा*
बाकर : *राजेश पांडे*
मुसाहब : *योगेश शर्मा*
भौजी/बेड़नी : *स्वाति मोदी*
गुइयां : *प्रतिभा समैया, संगीता नंगराड़े, कुमुद पटेल*
घरैनी/बेड़नी : *रीता रानी दास*
नन्नाजू : *मीना पांडे*
कक्का : *अजय काकोनिया*
पंडित जी : *सुरेश जर्गर*
गंगाधर : *सम्पूर्ण तिवारी*
खयाली राम : *जगदीश यादव*
चतुर्भज : *परेश दत्त तिवारी*
गमैयां : *बल बहादुर ठाकुर, मधु नागराज*
हेमंत सराफ : *ऋषि यादव*।

नेपथ्य

संगीत : *मुरलीधर नागराज*
वादक : *धनराज, शिवकुमार*
नृत्य परिकल्पना : *स्वाति मोदी, संजय खन्ना, संजीव चौधरी*
रूपसज्जा : *कश्यप झा, धर्मराज*
वेशभूषा : *गिरीश सोनी*
प्रकाश : *प्रमोद सोलंकी*
मंच सज्जा : *वसन्त चतुर्वेदी*
मंच व्यवस्था : *बांके बिहारी ब्यौहार*
प्रस्तुति व्यवस्था : *हिमांशु राय*
बुन्देली रूपान्तर : *द्वारका प्रसाद गुप्त 'गुप्तेश'*
आलेख : *अरुण पांडे*।

पश्चिम क्षेत्रीय नाट्य समारोह

संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा संचालित 'युवा रंगकर्मियों को प्रोत्साहन योजना' अपने क्रियान्वन के पाँच वर्ष पूरे करने के बाद छठे वर्ष में प्रवेश कर रही है। प्रस्तुत समारोह उसी योजना की अगली कड़ी है, जिसका आयोजन राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से किया जा रहा है।

इस योजना का उद्देश्य देश के उन रंगकर्मियों की सृजनात्मक प्रतिभा एवं ऊर्जा को समर्थन एवं सहयोग देना है जो आधुनिक संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए रंगमंच के नए मुहावरे की तलाश में संघर्षरत हैं।

पाँच दिवसीय इस नाट्य समारोह में चार भारतीय भाषाओं के चार प्रायोगिक नाट्य प्रस्तुत किए जाएंगे, तथा सम्बन्धित प्रस्तुतियों पर बहस सत्र होंगे। इस समारोह की श्रेष्ठ प्रस्तुति दिल्ली में होने वाले राष्ट्रीय समारोह में सम्मिलित होगी।

केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी और
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी
द्वारा आयोजित

पश्चिम क्षेत्रीय नाट्य समारोह

29 जनवरी– 1 फरवरी 1990 प्रतिदिन सायं 6.30 बजे
रवीन्द्र मंच, जयपुर

सोमवार 29 जनवरी	जेठवा ऊजळी (राजस्थानी)	अर्जुन देव चारण	रम्मत, जोधपुर
मंगलवार 30 जनवरी	दगड़ क माती (मराठी)	चन्द्रकान्त कुलकर्णी	इप्टा, बम्बई
बुधवार 31 जनवरी	ग्रहण (गुजराती)	महेश चम्पक लाल शाह	त्रिवेणी, बड़ौदा
बृहस्पतिवार 1 फरवरी	ईसुरी (हिन्दी)	अरूण पांडे	विवेचना, जबलपुर